बाहर की दुनिया बिल्कुल वैसी है, जैसा कि हम अंदर से सोचते हैं. हमारे विचार ही चीजों को सुंदर और बदसूरत बनाते हैं. - स्वामी विवेकानंद

युवा-शक्ति मिल कर बना रही नया भारत

दुनिया का पहला होलोग्राफिक एआर हेडसेट किया विकसित

इन दोस्तों ने शुरू की बदलाव की 'प्रतिलिपि'

रणजीत प्रताप सिंह, शंकरा नारायणन देवराजन, प्रशांत गुप्ता और राहुल रंजन, चारों दोस्त हैं. इनकी उम्र 29 से 30 वर्ष के बीच है. इन चारों युवाओं ने मिल कर वर्ष 2015 में नसादिया टक्नलॉजी 'प्रतिलिपि' की स्थापना की. यह एक सेल्फ पब्लिशिंग पोर्टल है. आपको जान कर आश्चर्य होगा कि कुछ ही वर्ष में इसके जरिये हजारों युवाओं को रोजगार मिला. अभी करीब 15 हजार लोग यहां नौकरी करते हैं. इस एप को अब तक लाखों यूजर डाउनलोड कर चुके हैं. नसादिया टेक्नोलॉजी की स्थापना की कहानी भी दिलचस्प है. दरअसल, उत्तर प्रदेश के फतेपुर के रहनेवाले रणजीत प्रताप सिंह के ताऊजी अपनी लिखी चीजों को छपवाने के लिए पैसे जमा किया करते थे. रणजीत के दिमाग में यह बात घर कर गयी थी कि अपने लिखे हुए को प्रकाशित करवाने के लिए भी पैसे देने होते हैं. फिर एमबीए करने के बाद उन्होंने कुछ दिन नौकरी भी की, लेकिन यह बात उनका पीछा नहीं छोड़ रही थी. फिर उन्होंने एक दिन नौकरी छोड़ी दी और अपनी जैसी सोच वाले दोस्तों का साथ लेकर 'प्रतिलिपि' को तैयार करने के लिए नसादिया टेक्नोलॉजी की स्थापना की. प्रतिलिपि एक सेल्फ पब्लिशिंग प्लेटफॉर्म है, जहां लोग अपनी कहानियां खुद से ऑनलाइन पब्लिश कर सकते हैं. वह भी फ्री में और आठ भारतीय भाषाओं में. यहां पाठकों का एक बड़ा संसार है.

वेजीटेरियन खाने की चाह ने बना दिया रेस्टोरेंट ऑनर

कैंडी एंड ग्रीन की फाउंडर श्रद्धा भंसाली की उम्र मात्र 26 वर्ष है. इस उम्र में रेस्टोरेंट बिजनेस में उन्होंने अपने अनोखे आइडिया के कारण बड़ा नाम कमाया है. श्रद्धा ने एक ऐसा रेस्टोरेंट एंड बार खोला है, जो सिर्फ वेजीटेरियन लोगों के लिए है. इसकी शुरुआत वर्ष 2017 में मुंबई में हुई थी. श्रद्धा को वेजीटेरियन रेस्टोरेंट खोलने का आइडिया तब आया, जब वह चाइना में जॉब कर रही थीं. इस दौरान वहां उन्हें वेजीटेरियन खाने की तलाश में परेशान होना पड़ा था. श्रद्धा ने हॉस्पिटेलिटी और बिजनेस की पढ़ाई बोस्टन यूनिवर्सिटी से की है. इनके रेस्टोरेंट की यूएसपी है कि खाना बनाने के लिए इस्तेमाल होने वाले इंग्रेडिएंट्स इनके रेस्टोरेंट में ही उगाये जाते हैं.

बनाया खुद से सीखने में मदद करने वाला प्लेटफॉर्म

सबसे कम उम्र की विश्वकप विजेता भारतीय निशानेबाज

हरियाणा के झज्जर की रहनेवाली 16 वर्षीया निशानेबाज मनु भाकर फिलहाल 12वीं क्लास में हैं और मेडिकल की तैयारी कर रही हैं. 21वें कॉमनवेल्थ में उन्होंने ऐसा निशाना साधा कि भारत की झोली में गोल्ड आया. मनु ने पिछले वर्ष मैक्सिको के गुआदालाजारा में हुए आइएसएसएफ विश्व कप में एक नहीं, बल्कि दो-दो स्वर्ण पदक अपने नाम किये. मनु ने साल 2016 में शूटिंग की शुरुआत की थी और इन सालों के अंतराल में नेशनल चैंपियन बन गयीं. निशानेबाजी विश्वकप में मनु से पहले सबसे कम उम्र में स्वर्णपदक जीतने का भारतीय रिकॉर्ड गगन नारंग और राही सरनोबत के नाम दर्ज था, लेकिन मनु ने इन दो पूर्व दिग्गजों के रिकॉर्ड तोड़ कर यह साबित कर दिया कि आने वाले एक दशक में वह भारतीय शूटिंग का सबसे चमकीला सितारा होंगी.

जीवन परिचय

मूल नाम : नरेंद्रनाथ दत्त
जन्म : 12 जनवरी, 1863 (कोलकाता)
मृत्यु : 4 जुलाई, 1902
रामकृष्ण मठ, बेलूर
गुरु : रामकृष्ण परमहंस
कर्मक्षेत्र : दार्शनिक, धर्म प्रवर्तक और संत
विषय : साहित्य, दर्शन और इतिहास
विदेश यात्रा : अमेरिका, ब्रिटेन, जर्मनी,रूस और पूर्वी यूरोप में अनेक व्याख्यान

उठो, जागो और तब तक रुको नहीं, जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाये. यह जीवन अल्पकालीन है, संसार की विलासिता क्षणिक है, लेकिन जो दूसरों के लिए जीते हैं, वे वास्तव में जीते हैं.

गुलाम भारत में ये बातें स्वामी विवेकानंद ने कही थीं. उनकी इन बातों पर देश के लाखों युवा फिदा हो गये थे. कोलकाता में विश्वनाथ दत्त के घर में जन्मे नरेंद्रनाथ दत्त (स्वामी विवेकानंद) को सनातन धर्म के मुख्य प्रचारक के रूप में जाना जाता है. नरेंद्र के पिता पाश्चात्य सभ्यता में विश्वास रखते थे. वह चाहते थे कि उनका पुत्र भी पाश्चात्य सभ्यता के मार्ग पर चले, मगर नरेंद्र ने 25 साल की उम्र में घर-परिवार छोड़ कर संन्यासी का जीवन अपना लिया. परमात्मा को पाने की लालसा के साथ तेज दिमाग ने युवक नरेंद्र को देश के साथ-साथ दुनिया में विख्यात बना दिया. नरेंद्रनाथ दत्त के नौ भाई-बहन थे. पिता विश्वनाथ दत्त कलकत्ता हाइकोर्ट में वकील और दादा दुर्गाचरण दत्त संस्कृत और पारसी के विद्वान थे. अपने युवा दिनों में नरेंद्र की अध्यात्म में रुचि हो गयी थी. स्वामी विवेकानंद ने दर्शनशास्त्र, धर्म, इतिहास, सामाजिक विज्ञान, कला और साहित्य जैसे विभिन्न विषयों को काफी पढ़ा. साथ ही उन्होंने वेद, उपनिषद्, भगवद्गीता, रामायण, महाभारत और पुराण को भी पढ़ा. नरेंद्रनाथ दत्त की जिंदगी में सबसे बड़ा मोड़ 1881 के अंत और 1882 के प्रारंभ में आया, जब वह अपने दो मित्रों के साथ दक्षिणेश्वर जाकर काली-भक्त रामकृष्ण परमहंस से मिले. यहीं से नरेंद्र का 'स्वामी विवेकानंद' बनने का सफर शुरू हुआ. सन् 1884 में पिता की अचानक मृत्यु से नरेंद्र को मानसिक आघात पहुंचा. उनका विचलित मन देख उनकी मदद रामकृष्ण परमहंस ने की. उन्होंने नरेंद्र को अपना ध्यान अध्यात्म में लगाने को कहा. मोह-माया से संन्यास लेने के बाद उनका नाम स्वामी विवेकानंद पड़ा.

मनुष्य को पूरी तरह से जागृत करते विवेकानंद के सिद्धांत

मैंने जब स्वामी विवेकानंद के कामों को अच्छी तरह जाना और उसे समझने के बाद मेरा जो अपने देश के प्रति प्यार था, वह हजारों गुणा अधिक हो गया. उनकी लेखनी किसी परिचय की मोहताज नहीं है. वह स्वयं ही अत्यंत आकर्षित करते हैं.

- महात्मा गांधी

विवेकानंद ने कहा था कि हर व्यक्ति में भगवान की शक्ति है, जो यह चाहती है कि हम अपनी सेवा गरीबों के माध्यम से करें. यह सिद्धांत इंसान के अंहकारपूर्ण स्वार्थ से असीमित आजादी का रास्ता दिखाता है. विवेकानंद के सिद्धांत मनुष्य को पूरी तरह से जागृत करते हैं. यदि आप भारत को जानना चाहते हैं, तो विवेकानंद को पढ़ें.

- रवींद्रनाथ टैगोर

मैं हर्षोन्माद के बिना विवेकानंद के बारे में कुछ भी नहीं लिख सकता हूं. उनके बलिदान में लापरवाही, उनके कार्यों में निरंतरता, असीम प्यार, उनकी सोच में गहराई, भावनाओं में हरियालीपन, अपने हमलोगों में निष्ठुरता, लेकिन एक बच्चे की तरह निष्कपट और सहज. वे हमारी दुनिया के दुर्लभ व्यक्तित्व थे.

- नेताजी सुभाषचंद्र बोस

उन्होंने वेदांत के अद्वैतवाद की व्याख्या की, जो न सिर्फ आध्यात्मिक था, बल्कि तर्कसंगत भी और जिसकी संगति प्रकृति के वैज्ञानिक अनुसंधान से मिलती-जुलती थी. स्वामी विवेकानंद के जैसा शख्स आपको कहां मिल सकता है? उन्होंने जो लिखा है, उसे पढ़ें और उनके द्वारा दी गयी शिक्षा से सीखें. आप ऐसा करते हैं, तो आप असीम शक्ति प्राप्त करेंगे. उनके विवेक और बुद्धिमत्ता के फव्वारे से, उनके जोश से और उनमें बहने वाली आग से लाभ लें.

- पंडित जवाहरलाल नेहरू

धार्मिक हठ ने लंबे समय से इस खूबसूरत धरती को जकड़ रखा है

वर्ष 1893 में अमेरिका के शिकागो में हुई विश्व धर्म परिषद में स्वामी विवेकानंद भारत के प्रतिनिधि के रूप से पहुंचे थे, जहां यूरोप-अमेरिका के लोगों द्वारा गुलामी झेल रहे भारतीयों को हीन दृष्टि से देखा जाता था. एक अमेरिकी प्रोफेसर के प्रयास से स्वामी विवेकानंद को बोलने के लिए थोड़ा समय मिला. उनके विचार सुन कर वहां मौजूद सभी विद्वान चकित रह गये. उनकी कही खास बातें.

- अमेरिकी भाइयों और बहनों, आप ने जिस स्नेह के साथ मेरा स्वागत किया है, उससे मेरा दिल भर आया है. मैं दुनिया की सबसे पुरानी संत परंपरा की तरफ से धन्यवाद देता हूं. सभी जातियों और संप्रदायों के लाखों-करोड़ों हिंदुओं की तरफ से आपका आभार व्यक्त करता हूं.
- मैं इस मंच पर बोलने वाले कुछ वक्ताओं का भी धन्यवाद करना चाहता हूं, जिन्होंने यह जाहिर किया कि दुनिया में सहिष्णुता का विचार पूरब के देशों से फैला है.
- मुझे गर्व है कि मैं उस धर्म से हूं, जिसने दुनिया को सहिष्णुता और सार्वभौमिक की स्वीकृति का पाठ पढ़ाया है. हम सिर्फ सार्वभौमिक सहिष्णुता पर ही विश्वास नहीं करते, हम सभी धर्मों को सच के रूप में स्वीकार करते हैं.
- मुझे गर्व है कि मैं उस देश से हूं, जिसने सभी धर्मों और सभी देशों के सताये गये लोगों को अपने यहां शरण दी. मुझे गर्व है कि हमने अपने दिल में इस्राइल की वे पवित्र यादें संजो रखी हैं, जिनमें उनके धर्मस्थलों को रोमन हमलावरों ने तहस-नहस कर दिया था और फिर उन्होंने दक्षिण भारत में शरण ली.
- मैं इस मौके पर वह श्लोक सुनाना चाहता हूं, जो मैंने बचपन से याद किया और जिसे रोज करोड़ों लोग दोहराते हैं. 'जिस तरह अलग-अलग जगहों से निकली नदियां, अलग-अलग रास्तों से होकर आखिरकार समुद्र में मिल जाती हैं, ठीक उसी तरह मनुष्य अपनी इच्छा से अलग-अलग रास्ते चुनता है. ये रास्ते देखने में भले ही अलग-अलग लगते हैं, लेकिन ये सब ईश्वर तक ही जाते हैं.'
- सांप्रदायिकता, कट्टरता और इसके भयानक वंशजों के धार्मिक हठ ने लंबे समय से इस खूबसूरत धरती को जकड़ रखा है. उन्होंने धरती को हिंसा से भर दिया है और कितनी ही बार यह धरती खून से लाल हो चुकी है. न जाने कितनी सभ्यताएं तबाह हुईं और कितने देश मिटा दिये गये.
- यदि ये खौफनाक राक्षस नहीं होते, तो मानव समाज कहीं ज्यादा बेहतर होता, जितना कि अभी है, लेकिन उनका वक्त अब पूरा हो चुका है. मुझे उम्मीद है कि इस सम्मेलन का बिगुल सभी कट्टरता, हठधर्मिता व दुखों का विनाश करने वाला होगा. चाहे वह तलवार से हो या फिर कलम से.